आधुनिक हिंदी साहित्य में हिंदी पत्राकारिता का महत्व

शिखा उमराव,

शोध छात्रा,

ज्वाला देवी विद्या मंदिर पी.जी. कालेज,

कानपुर

आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी शिक्षा विधवाओं की दुर्दशा, छुआछूत आदि जनता की समस्याओं का व्यापक रूप से चित्राण किया गया। भारतेंदु युगीन नवजागरण में एक ओर राजभक्ति दूसरी ओर देशभक्ति है। राष्ट्र प्रेम से ओत–प्रोत कर देती है ये पंक्तियां अकबर इलाहाबादी ने कहा है– 'खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो। जब तोप मुकाबिल हो तो, अखबार निकालो।' चितंक, साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर का मानना है– 'सृजक और पत्राकार क्या सचमुच दो अलग अलग व्यक्तित्व हैं। मेरी मान्यता रही है कि वे दो होकर भी कहीं न कहीं एक हैं।

पत्राकारिता सत्य का शोध एवं मूल्य प्रतिष्ठापना का सतत संघर्ष है। कला, साहित्य, काल, इतिहास के अंधेरे–उजालों के बीच पत्राकारिता सूर्य विथि बनाती राष्ट्रीय लोक चेतना को उद्दीप्त करने का समर्थ समर्थ माध्यम है। गीता में जगह–जगह शुभ दृष्टि का प्रयोग है, जय शुभ दृष्टि ही पत्राकारिता है जिसमें गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है। महात्मा गांधी तो इसमें 'समदृष्टि' को महत्व देते थे। सम्यक हित में सम्यक प्रकाशन को पत्राकारिता कहा जा सकता है। असत्य, अशिव और असुंदर पर 'सता शिव सुंदरम' की शंखध्वनि ही पत्राकारिता है। बालकृष्ण के मत में प्रत्येक पत्राकार अशांतः साहित्यकार भी हैं और प्रत्येक साहित्यकार अनिवार्यतः पत्राकार भी। आज का युग विज्ञान की मधु भरी फुंकार से मस्त हो रहा है। समाचार की विवशता कहूं या पत्राकारिता का आंतक कि हमारा गीतकार कहता है– 'खुलते ही आंखे सवेरे की, अखबार दिखाता हत्याएं।'

स्वतंत्राता संग्राम के दिनों में भारतीय पत्राकारिता ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस समय समाचार पत्रा जनता तक पहुंच चुके थे। किसी प्रकार के अन्याय जा पक्षपात का प्रतिकार करने के लिए जनता जब उठ खड़ी होती है तो उसे अपनी आवाज बुलंद करने के लिए पत्रा पत्रिकाओं का सहारा लेना पड़ता है। उन दिनों जनजागरण का केंद्र कोलकाता नगर था। हिंदी पत्राकारिता का आरंभ वहीं से हुआ। पत्राकारिता को चौथा आधार स्तंभ माना जाता है और जैसेकि साहित्यकार और पत्राकार में पफर्क नहीं है, साहित्य समाज का दर्पण हैं, मैथिलीशरण गुप्त की यह पंक्तियां बहुत ही सटीक हैं– ''केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए, उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।''

पत्रर–पत्रिकाओं से जनता को अनेक तरह का ज्ञान मिला, राष्ट्रीय भावना जागी। प्रथम उत्थान में अधिकतर साप्ताहिक पत्राों का प्रकाशन हुआ। इनमें प्रयुक्त हिंदी भाषा टूटी–पफूटी और अर्प्याप्त होती थी। 'भारतेंदु का स्थान हिंदी पत्राकारिता के क्षेत्र में अन्यतम है। उन्होंने हिंदी के बढ़ते प्रभाव को दूर करने की भरपूर चेष्टा

की। कविवचन सुधा के प्रकाशन से लेकर भारतेंदु के अस्त होने तक, हिंदी पत्राकारिता के विकास का दूसरा उत्थान ;1835–1885द्ध पूरा हो जाता है। इस अवधि में हिंदी भाषा का रूप स्थिर और परिमार्जित हुआ, जागरण और सुधार की भावना का प्रसार हुआ तथा अनेक वर्ण और धर्मों में विभाजित भारतवासियों ने अपनी जाति वर्ग के उत्थान के लिए जातीय और धार्मिक पत्रा–पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ किया। क्रमशः पत्रा–पत्रिकाओं में गंभीर लेख निकलने लगे और कुछ शु(साहित्यिक कविताओं का प्रकाशन भी हुआ। उन के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना भी अधिक प्रखर रूप में सामने आई।

हिंदी पत्राकारिता के तृतीय उत्थान ;1886–1900द्ध में 200 से ऊपर छोटी बड़ी हिंदी पत्रा–पत्रिकाएं प्रकाशित हुई। इनमें हिंदी भाषा की शक्ति एवं लोकप्रियता का बोध तो होता ही है–देशव्यापी जन जागरण की सूचना भी मिलती है। कुछ पत्रा–पत्रिकाएं मुख्य है– 1.बनारस, 2. नागरी नीरद, 3. हिंदी बंगवासी, 4. नागरी प्रचारिणी–पत्रिका, 5. सरस्वती आदि।

हिंदी प्रदेश में भारतेंदु के समय में जो राष्ट्रीय जागरण की लहर आई थी उसे 'हिंदी प्रदीप' ने पूरी शक्ति से जीवित रखा। इस पूरी अवधि में राष्ट्र का नेतृत्व कांग्रेस के नरम या उदार नेताओं के हाथ में था। 'संवत 1919 और 1924 के बीच कई संवाद–पत्रा हिंदी में निकले। 'प्रजाहितैषी' का उल्लेख हो चुका है। संवत 1920 में 'लोकमित्र' नामक एक पत्रा ईसाई धर्म प्रचार के लिए आगरा से निकला था, जिसकी भाषा शु(हिंदी होती थी। लखनऊ से जो 'अवध अखबार' ;उर्दूद्ध निकलने लगा था उसके कुछ भाग में हिंदी के लेख भी रहते थे।''3

मुंशी प्रेमचंद ने 'हंस' नामक पत्रा का संपादन किया। जयशंकर प्रसाद ने 'दूंदु' पत्रा का, पंत ने 'रुपाभ' पत्रा का, निराला ने मतवाला को, अज्ञेय ने प्रतीक का, धर्मवीर भारती ने निकष का संपादन किया। हिंदी के लगभग सभी साहित्यकारों ने पत्राकारिता के क्षेत्र में मुख्य भूमिका निभाई है। 'ब्राह्मण' संपादक पं0 प्रतापनारायण मिश्र को ग्राहकों से चंदा मांगते–मांगते थक कर कभी–कभी पत्र में इस प्रकार याचना करनी पड़ती थी– ''आठ मास बीते जजमान। अब तो करो दक्षिणा दान।''4

भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र इसे खूब समझते थे इसलिए श्रीमंत होते हुए भी उन्हें बंधी हवा पसंद नहीं थी और 11 वर्ष की अवस्था में ही वे देश–देशा का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने निकल पड़े थे। देश की दुर्दशा देखकर हरिश्चंद्र व्यथित हो गए थे– ''अब जहं देखहु तंह दुःखहि दुःख दिखाई। हा हा। भारत दुर्दशा ना देखी जाए।।''

23 मार्च 1876 की 'कविवचन सुधा' में भारतेंदु ने एक प्रतिज्ञा पत्रा प्रकाशित किया थाः 'हम लोग स्वान्तदासी सत्रा स्थल में वर्तमान सर्वद्रष्टा और नित्य सत्य परमेश्वर को साक्षी देकर यह नियम मानते हैं और लिखते हैं कि हम लोग आज के दिन से कोई विलायती कपड़ा नहीं पहनेंगे और जो कपड़ा पहले से मोल ले चुके हैं और आज की मिती तक हमारे पास है उनको तो उनके जीर्ण हो जाने तक काम में लाएंगे पर नवीन मोल लेकर किसी भांति का विलायती कपड़ा न पहिरेंगे हिंदुस्तान का बना कपड़ा पहिरेंगे। हम आशा रखते हैं कि इसको बहुत ही क्या प्रायः सब लोग स्वीकार करेंगे ।

धीरे–धीरे विभिन्न समाचार पत्रा पत्रिकाओं का प्रकाशन बढ़ता चला गया। विद्वानों ने हिंदी पत्रिका के विकास क्रम को प्रारंभिक युग, भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, स्वतंत्रता पूर्व युग तथा स्वातन्त्रयोतर युग पांच भागों में विभक्त किया है। आज भारत में असंगठित पत्रा–पत्रिकाएं हिंदी में प्रकाशित हो रही हैं। प्रमुख दैनिक पत्राों में दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, पंजाब केसरी, दैनिक हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स, अमर उजाला आदि के नाम गिनवाए जा

सकते हैं। इसी प्रकार कुछ पत्रिकाएं हिंदी साहित्य जगत में अपना योगदान दे रही हैं।

हिंदी पत्रकारिता की प्रथम उपलब्धि यह है कि इसमें भारतवासियों में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक चेतना को जागृत किया है। लोकतंत्रा की सपफलता के लिए पत्राकारिता का विशेष महत्व है। इस दिशा में हमारे समाचारपत्रा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वे जब–तब भ्रष्ट राजनीतिज्ञ और उनके काल–कारनामों का पर्दापफाश करते हैं, समाचार पत्रों के पफलस्वरुप ही घर घर में राजनीति का प्रवेश हो चुका है, अधिकांश मतदाता अपने मतदान के महत्व को भली प्रकार से पहचानने लगे हैं। इसी प्रकार सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों तथा जड़ परंपराओं का अनुमोदन करने में भी पत्राकारिता का विशेष योगदान रहा है। यद्यपि भारतेंदु युग और द्विवेदी युग के साहित्यकार सामाजिक जागरण का बीड़ा उठा चुके थे लेकिन इस कार्य को संपन्न करने में समाचार पत्रों की विशेष भूमिका रही है। इसी प्रकार विज्ञान, कृषि, शिक्षा जगत, समाजशास्त्रा, चिकित्सा आदि विभिन्न क्षेत्रों में भी समाचार पत्रों का योगदान रहा है। समाचार पत्रा समाज के निर्माण में भी अपना योगदान दे रहे हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति प्रातः काल होते ही सर्वप्रथम समाचार पत्रा की ही मांग करता है क्योंकि वह विश्व भर की घटनाओं से परिचित होना चाहता है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पत्राकारिता का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व है। आज मानव भोजन के बिना रह सकता है लेकिन समाचार पत्रा के बिना नहीं। हिंदी साहित्यकार की रचनाएं प्रायः पत्रा–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है। मैथिलीशरण गुप्त जो निम्न पंक्तियां अक्सर देखी जाती हैं जिसमें नारी के जीवन पर प्रकाश डाला है–

"अबला जीवन हाय! तेरी यही कहानी। आंचल में दूध, आंखों में पानी।।"

निराला जी, गुप्त जी, प्रसाद, महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि साहित्यकारों ने हिंदी भाषा को बहुत महत्व दिया है। हिंदी लेखकों, कवियों ने पत्रिकाओं के माध्यम से अनेक बुराइयों को समाज में सुधारने पर जोर दिया है। 'शैली में प्रगल्भता और विचित्राता चाहे न आई हो पर काव्य भूमि का प्रसार अवश्य हुआ। प्रसार और सुधार से ही रह–रहकर की जो चर्चा नागरीप्रचारिणी सभा की स्थापना के समय से ही रह–रहकर थोड़ी बहुत होती आ रही थी वह 'सरस्वती' निकलने के साथ ही कुछ अधिक ब्योरे के साथ हुई। उस पत्रिका के प्रथम दो–तीन वर्षों के भीतर ही ऐसे लेख निकले जिनमें सापफ–सापफ कहा गया कि अब नायिका भेद और श्रृंगार में ही बंधे रहने का जमाना नहीं है, संसार में न जाने कितनी बातें हैं जिन्हें लेकर कवि चल सकते हैं। इस बात पर द्विवेदी जी बराबर जोर देते रहे और कहते रहे कि कविता के बिगड़ने और उसकी सीमा परिमित हो जाने से साहित्य पर भारी आघात होता है। द्विवेदी जी 'सरस्वती' के संपादन काल में कविता में नयापन लाने के बराबर इच्छुक रहे।6 भारत के स्वतंत्राता संग्राम में हिंदी ने ऐतिहासिक महत्व का योगदान किया। महात्मा गांधी तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं ने हिंदी भाषा के महत्व को स्वीकार किया तथा राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता दी परंतु आज भारत में हिंदी की जो स्थिति है उससे वह अंग्रेजी की दासी बन गई है।

भारत में हिंदी की दुर्दशा को देखकर विदेशों में हिंदी के प्रचार–प्रसार, अध्ययन अध्यापन तथा पत्रा–पत्रिकाओं के प्रकाशन की किसी बेहतर स्थिति की कल्पना करना सर्वथा अनुचित होगा, पिफर भी पत्राकारिता के माध्यम से इसका विकास हुआ है। 'मतवाला' पत्रा में यह पंक्तियां प्रथम पृष्ठ पर छपती थी, साप्ताहिक पत्रा था।

"अमिय गरल शशि–शीकर, रवि–कर राग–विराग भरा प्याला।

पीते हैं जो साधक उनका प्यारा है यह 'मतवाला'।।"

'विशाल भारत' संपादक पं0 बनारसीदास चतुर्वेदी थे। हिंदी के अधिकांश श्रेष्ठ लेखकों का सहयोग उसे प्राप्त था। राजनीतिक और सामाजिक लेख भी उस में प्रकाशित होते थे। इन सब के मूल में संपादक का व्यक्तित्व ही प्रधान था। चतुर्वेदी का संबंध अधिकांश महापुरुषों से था, पत्राकारिता ही चतुर्वेदी जी का धर्म रहा।

हिंदी में अनेक पत्रा सामने आए जैसे– 'बनारस अखबार' राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' ने 'इंदु' अम्बिका प्रसाद गुप्त ने तथा इसी पत्रा में जयशंकर प्रसाद की आरंभिक रचनाएं प्रकाशित हुई। कर्मवीर, 'प्रभा' पत्रों का संपादन माखनलाल चतुर्वेदी ने 'चांद' महादेवी वर्मा, 'हंस' प्रेमचंद्र 'भारत' नंददुलारे बाजपेई 'रुपांश' पंत, प्रतीक अज्ञेय, आलोचन धर्मवीर भारती, 'दस्तावेज' सं0 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी 'साहित्य अमृत' सं0 विद्यानिवास मिश्र 'नया ज्ञानोदय' सं0 रवींद्र कालिया लगभग सभी साहित्यकार पत्राकार ही हैं।

'बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक की बंगीय हिंदी, पत्राकारिता का भी भाषा–निर्माण की दृष्टि से बड़ा महत्व है हिंदी के श्रेष्ठ शैलीकार बाबू बालमुकुंद गुप्त इस समय 'भारतमित्रा' के संपादक थे। भाषा और व्याकरण के असाधारण पंडित गोविंदनारायण मिश्र कलकत्ते में ही थे और हिंदी–बंगवासी में लिखते थे। पं0 जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, पं0 माधव प्रसाद मिश्र और पं0 अम्बिका प्रसाद वाजपेई भी कलकत्ते ही थे।

निष्कर्ष

हिंदी पत्राकारिता ने समाज के हर पहलू को उजागर किया है। अनेक सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिस्थितियों को उजागर किया है। हम देखते हैं कि कलकता आधुनिक हिंदी गद्य शैली की जन्मभूमि ही नहीं बल्कि इसके क्रमिक विकास और उन्नयन में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस महत्व अधिकांश श्रेय कलकत्ते की हिंदी पत्राकारिता को जाता है। वस्तुतः पत्राकारिता हमें समाज के विभिन्न वर्गों, समस्याओं तथा विचारों को समझने में सहायता देती हैं। पत्राकारिता दैनिक जीवन का ही एक हिस्सा बन गई है।

संदर्भ

- 'हिंदी पत्राकारिता– कल, आज और कल', संपादक सुरेश गौतम, वीणा गौतम, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
- हिंदी साहित्य का इतिहास' डॉ नगेंद्र पृष्ठ संख्या 470
- 'हिंदी साहित्य का इतिहास', आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ सं. 319, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली–110002
- हिंदी साहित्य का इतिहास', आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी, पृष्ठ सं. 328
- हिंदी पत्राकारिता', डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, पृष्ठ सं.114, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
- हिंदी साहित्य का इतिहास', आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ सं. 451
- 'हिंदी पत्राकारिता', डॉ कृष्णबिहारी मिश्र
- 'हिंदी पत्राकारिता', डॉ कृष्ण बिहारी मिश्र, पृष्ठसं. 438
- 'हिंदी पत्राकारिता', डॉ कृष्ण बिहारी मिश्र, पृष्ठसं. 462